

इस्लाम धर्म की विशेषता

मुहम्मद बिन अब्दुल वद्हाब

इस पुस्तक में इस्लाम धर्म की विशेषता तथा इस तथ्य का वर्णन है कि इस्लाम सर्वश्रेष्ठ धर्म है, और यही वह ईश्वरीय धर्म है जिस के बिना किसी भी मनुष्य को सौभाग्य और मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता। अतः समस्त लोगों पर इस्लाम को स्वीकार करना और उसके अतिरिक्त अन्य धर्मों को त्याग देना अनिवार्य है। जो

व्यक्ति इस्लाम को छोड़ कर कोई अन्य धर्म तलाश करे गा, तो अल्लाह तआला उस को कदापि स्वीकार नहीं करे गा। तथा इस बात का उल्लेख है कि बिद्अत बड़े-बड़े गुनाहों से भी अधिक भीषण और भयंकर है, इस लिए बिद्अतों से बचाव करना अविवार्य है। तथा जिस प्रकार आरम्भ में इस्लाम के अनुयायी थोड़े थे उसी प्रकार अन्त में भी इस के मानने वाले कम हो

जायेंगे, अतः उस समय इस्लाम पर जमे
रहने वालों के लिए शुभ सूचना है

<https://islamhouse.com/७६०१५>

- इस्लाम की विशेषता
 - संक्षिप्त परिचय
 - इस्लाम की विशेषता
 - इस्लाम स्वीकार करने की अनिवार्यता
 - इस्लाम की व्याख्या
 - अल्लाह तआला के फ़र्मान **وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ**
 - की व्याख्या

- किताबुल्लाह की पैरवी करके
उसके अतिरिक्त अन्य वस्तुओं से
बेनियाज़ होने की अनिवार्यता
- इस्लाम के दावा से निकल जाने
का वर्णन
- इस्लाम में सम्पूर्ण रूप से प्रवेश
करने और उसके अतिरिक्त अन्य
धर्मों के परित्याग की
अनिवार्यता
- बिद्अत बड़े-बड़े गुनाहों से भी
अधिक सख्त
- अल्लाह तआला बिद्अती की
तौबा स्वीकार नहीं करता
- अल्लाह तआला के फ़र्मान يَا أَهْلَ
الْكِتَابِ لِمَ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ..... وَمَا
كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ का वर्णन

- अल्लाह तआला के फ़र्मान **فَأَقِمْ**
- وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا
- इस्लाम की अजनबियत और
- गुरबा (अजनबियों) की विशेषता
- बिद्अतों पर चेतावनी

इस्लाम की विशेषता

लेखक

शैखुल इस्लाम मुहम्मद बिन अब्दुल

बहहाब

अनुवाद

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

संशोधन

शफ़ीक़ुर्रहमान ज़ियाउल्लाह मदनी

संक्षिप्त परिचय

इस्लाम की विशेषता: इस पुस्तक में इस्लाम धर्म की विशेषता तथा इस तथ्य का वर्णन है कि इस्लाम सर्वश्रेष्ठ धर्म है। यही वह ईश्वरीय धर्म है, जिसके बिना किसी भी मनुष्य को सौभाग्य और नजात प्राप्त नहीं हो सकती। अतः समस्त लोगों पर इस्लाम को स्वीकार करना और उसके अतिरिक्त अन्य धर्मों को त्याग देना अनिवार्य है। जो व्यक्ति इस्लाम को छोड़कर कोई अन्य धर्म तलाश करेगा, तो अल्लाह तआला उसको कदापि स्वीकार

नहीं करेगा। इस बात का भी उल्लेख है कि बिद्अत बड़े-बड़े गुनाहों से भी भीषण और भयंकर है। इसलिए बिद्अतों से दूर रहना अनिवार्य है। तथा जिस प्रकार आरम्भ में इस्लाम के अनुयायी थोड़े थे, उसी प्रकार अन्त में भी इसके मानने वाले कम हो जायेंगे। अतः उस समय इस्लाम पर जमे रहने के लिए शुभ सूचना है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ, जो अति मेहरबान और दयालु है।

इस्लाम की विशेषता

अल्लाह तआला का फ़रमान है:

﴿الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي
وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا﴾ [١]

“आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे धर्म को सम्पूर्ण कर दिया, अपनी नेमतें तुमपर पूरी कर दीं और इस्लाम को तुम्हारे लिए धर्म स्वरूप पसन्द कर लिया।”

तथा फ़रमाया:

﴿قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِّن دِينِي فَلَا
أَعْبُدُ الَّذِينَ

تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ وَلَكِن أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي يَتَوَقَّعُكُمْ

﴾ [٢]

“आप कह दीजिए कि ऐ लोगो! यदि तुम मेरे धर्म के प्रति संदेह में हो, तो मैं उनकी उपासना नहीं करता, जिनकी उपासना

तुम अल्लाह को छोड़कर करते हो। किन्तु मैं उस अल्लाह की उपासना करता हूँ, जो तुम्हें मृत्यु देता है।”

तथा अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَءَامِنُوا بِرَسُولِهِ
يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِن رَّحْمَتِهِ وَيَجْعَل لَّكُمْ نُورًا تَمْشُونَ
بِهِ وَيَغْفِرَ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ [3]﴾

“ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाओ। अल्लाह तुम्हें अपनी रहमत (कृपा) का दोहरा भाग देगा और तुम्हें नूर (प्रकाश) प्रदान करेगा, जिसके प्रकाश में तुम चलो-फिरोगे और तुम्हारे गुनाह भी क्षमा कर देगा। अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है।”

सहीह बुखारी में अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“तुम्हारा तथी यहूदियों और ईसाइयों का उदाहरण उस आदमी के समान है, जिसने मज़दूरी पर कुछ मज़दूर रखे और कहा कि कौन सुबह से दोपहर तक मेरा काम एक क़ीरात पर करेगा? तो यहूदियों ने काम किया। फिर उसने कहा कि कौन दोपहर से अस्त्र तक मेरा काम एक क़ीरात पर करेगा? तो ईसाइयों ने काम किया। फिर उसने कहा कि कौन अस्त्र की नमाज़ से सूरज डूबने तक दो क़ीरात पर करेगा? तो वह (अर्थात् इस दर्मियान काम करने

वाले) तुम लोग हो। इस पर यहूदी और ईसाई क्रोधित हो गये और कहने लगे कि यह क्या बात हुई? काम तो हम अधिक करें, पर मज़दूरी कम पायें? तो उसने कहा: क्या मैंने तुम्हारा कुछ हक़ मार लिया है? वह बोले: नहीं। तो उसने कहा कि यह मेरा फ़ज़ल (कृपा) है, जिसे चाहूँ, दूँ।”

तथा सहीह बुख़ारी में अबू हरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह बयान करते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“अल्लाह तआला ने हमसे पहले लोगों को जुमे के दिन से वंचित रखा। चुनांचे यहूदियों के भाग में शनिवार का दिन आया और ईसाइयों के भाग में रविवार

का। फिर अल्लाह तआला ने हमें बरपा किया और जुमे के दिन से नबाज़ा। बिल्कुल ऐसे ही, वह क़यामत के दिन भी हमसे पीछे होंगे। हम दुनिया में अन्त में आये, किन्तु क़यामत के दिन सबसे आगे होंगे।”

और सहीह बुख़ारी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तालीक़न वर्णित है कि आपने फ़रमाया:

“अल्लाह के निकट सबसे पसंदीदा और सरल धर्म मिल्लते इब्राहीमी है।”

उबै बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, उन्होंने फ़रमाया:

“तुम लोग सुन्नत और सिराते मुस्तक्रीम – सीधे मार्ग- पर चलते रहो। क्योंकि ऐसा नहीं हो सकता कि कोई व्यक्ति सुन्नत और सिराते मुस्तक्रीम पर रहकर अल्लाह का ज़िक्र करे और अल्लाह के डर से उसकी आँखें आँसू बहायें और फिर उसे जहन्नम की आग छू ले। जो व्यक्ति सुन्नत और सिराते मुस्तक्रीम पर चलकर अल्लाह का ज़िक्र करे, फिर अल्लाह के डर से उसके रोंगटे खड़े हो जायें, उसका उदाहरण उस वृक्ष के समान है, जिसके पत्ते सूख चुके हों और सहसा आँधी आ जाये और उसके पत्ते झड़ जायें। उस व्यक्ति के गुनाह उसी तरह झड़ जाते हैं, जिस तरह उस वृक्ष के पत्ते। सिराते मुस्तक्रीम और सुन्नत के अनुसार

की हुई नियमित उपासना, उनके विरुद्ध की हुई अधिक उपासना से उत्तम है।”

अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, उन्होंने फ़रमाया:

“बुद्धिदमानों का सोना और उनका खाना-पीना क्या ही अच्छा है! यह मूर्खों के रात्रि-जाग्रण और रोज़ों को पीछे छोड़ देते हैं!! तक्रवा और यक्रीन के साथ की गई कण-बराबर नेकी, धोखे में पड़े हुए लोगों की पहाड़ बराबर उपासना से कहीं अधिक महान, श्रेष्ठ और वज़नी है।”

इस्लाम स्वीकार करने की अनिवार्यता

अल्लाह तआला का फ़र्मान है:

﴿وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي
الْآخِرَةِ مِنَ الْخَسِرِينَ﴾ [٥]

“जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त कोई
अन्य धर्म ढूँढे, उसका धर्म कदापि स्वीकार
नहीं किया जाएगा और वह प्रलोक में
घाटा उठाने वालों में से होगा।”

तथा अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ﴾ [٦]

“निःसन्देह, अल्लाह के निकट धर्म इस्लाम
ही है।”

तथा फ़रमाया:

﴿وَأَنَّ هَذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ وَلَا تَتَّبِعُوا
السُّبُلَ

﴿فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَن سَبِيلِهِ﴾ [٤]

“और यही धर्म मेरा सीधा मार्ग है। अतः इसी मार्ग पर चलो और दूसरी पगडण्डियों पर न चलो कि वह तुम्हें अल्लाह के मार्ग से अलग कर देंगी।”

मुजाहिद कहते हैं कि इस आयत में पगडण्डियों से अभिप्राय “बिदआत एवं संदेह” हैं।

आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“जिसने हमारे इस धर्म में कोई ऐसी चीज़ निकाली, जो धर्म का भाग नहीं है, तो वह मर्दूद (अस्वीकृत) है।” [७]

एक दूसरी रिवायत में है:

“जिसने कोई ऐसा काम किया, जिसपर हमारा आदेश नहीं है, तो वह काम मर्दूद (अस्वीकृत) है।” [८]

सहीह बुख़ारी में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“मेरी उम्मत का प्रत्येक व्यक्ति स्वर्ग में जाएगा, सिवाय उस आदमी के, जो इन्कार कर दे। पूछा गया कि स्वर्ग में प्रवेश करने से कौन इन्कार करेगा? तो आपने फ़रमाया: “जिसने मेरी आज्ञा का पालन किया, वह स्वर्ग में प्रवेश करेगा और

जिसने मेरी अवज्ञा की, उसने स्वर्ग में जाने से इन्कार किया।”

और सहीह बुख़ारी में अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“अल्लाह के निकट सबसे नापसन्दीदा लोग तीन हैं: प्रथम: हरम में बेदीनी (नास्तिकता) का प्रदर्शन करने वाला। द्वितीय: इस्लाम के अन्दर जाहिलियत का मार्ग ढूँढने वाला। तृतीय: किसी मुसलमान का अवैध खून बहाने का मुतालबा करने वाला।”[९]

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिय्या रहमतुल्लाहि
अलैहि फ़रमाते हैं:

“पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के
फ़र्मान “जाहिलियत का मार्ग” में पैग़म्बरों
के लाये हुए धर्म के विरुद्ध जाहिलियत का
प्रत्येग मार्ग सम्मिलित है। चाहे वह
सामान्य हो या कुछ ख़ास लोगों का, यहूद
एवं ईसाइयों का हो, मूरतीपूजकों का हो
या इनके अतिरिक्त किसी अन्य का।”

और सहीह बुख़ारी में हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु
अन्हु से वर्णित है, उन्होंने फ़रमाया:

“ऐ क़ारियों की जमाअत! सीधे मार्ग पर
चलते रहो। यदि तुम सीधे मार्ग पर रहोगे,
तो बहुत आगे निकल जाओगे। यदि दायें-

बायें मुड़ोगे, तो अति पथ-भ्रष्ट हो जाओगे।”

और मुहम्मद बिन वज़ज़ाह ने इस प्रकार वर्णन किया है कि हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद में प्रवेश करते हुए हल्कों के निकट खड़े होकर यह फ़रमाते।

वह अधिक वर्णन करते हैं कि हमसे सुफ़यान बिन उययना ने मुजालिद से और मुजालिद ने शअबी से और शअबी ने मसरूक़ से वर्णन करते हुए कहा है कि अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया:

“बाद में आने हर वर्ष गुज़रे हुए वर्षों से अधिक बुरा है। मैं यह नहीं कहता कि

फ़लाँ साल फ़लाँ साल से अधिक वर्षा वाला है, न यह कहता हूँ कि फ़लाँ साल फ़लाँ साल से अधिक हरा-भरा है और न ही यह कहता हूँ कि फ़लाँ अमीर फ़लाँ अमीर से श्रेष्ठ है, बल्कि वास्तविक बात यह है कि तुम्हारे उलेमा और अच्छे लोग समाप्त हो जायेंगे। इसके पश्चात ऐसे लोग पैदा होंगे, जो धार्मिक मामलों को अपने विचार पर क़यास करेंगे। जिसके कारण इस्लाम को ध्वस्त और नष्ट कर दिया जाएगा।”

इस्लाम की व्याख्या

अल्लाह तआला का फ़र्मान है:

(فَإِنْ حَاجُّوكَ فَقُلْ أَسَلَمْتُ وَجْهِي لِلَّهِ وَمَنْ
اتَّبَعَنِي [١٥])

“फिर यदि यह आपसे झगड़ें, तो आप कह दें कि मैंने और मेरे मानने वालों ने अल्लाह तआला के सामने अपना सिर झुका दिया है।”

सहीह मुस्लिम में उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“इस्लाम यह है कि तुम इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के पैग़म्बर हैं, नमाज़ स्थापित करो, ज़कात दो, रमज़ान के रोज़े रखो और मामर्थ्य हो तो अल्लाह के घर -कअबा- का हज़्ज करो।”[\[११\]](#)

और सहीह हदीस में अबू हुरैरह
रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्फूअन वर्णति है:

“मुसलमान वह है, जिसकी ज़बान और
हाथ से दूसरे मुसलमान सुरक्षित रहें।”

और बहज़ बिन हकीम से वर्णित है, वह
अपने बाप के वास्ते से अपने दादा से
वर्णन करते हैं कि उन्होंने पैग़म्बर
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस्लाम के
विषय में प्रश्न किया, तो आपने फ़रमाया:

“इस्लाम यह है कि तुम अपना हृदय
अल्लाह को सोंप दो, अपना मुख अल्लाह
की ओर कर लो, फ़र्ज़ नमाज़ें पढ़ो और फ़र्ज़
ज़कात दो।”[१२]

अबू क़िलाबा एक शामी (सीरियन) आदमी से वर्णन करते हैं कि उसके बाप ने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न किया कि इस्लाम क्या है? तो आपने फ़रमाया:

“इस्लाम यह है कि तुम अपना दिल अल्लाह के हवाले कर दो और मुसलमान तुम्हारी ज़ुबान और तुम्हारे हाथ से सुरक्षित रहें।” फिर उन्होंने प्रश्न किया कि इस्लाम का कौन-सा काम सर्वश्रेष्ठ है? तो आपने फ़रमाया: “ईमान।” उसने कहा कि ईमान क्या है? तो आपने फ़रमाया: “ईमान यह है कि तुम अल्लाह पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी उतारी हुई पुस्तकों पर, उसके पैग़म्बरों पर और मरने के बाद

दुबारा उठाए जाने पर विश्वास रखो।” [१३]

وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ

يُقْبَلَ مِنْهُ की व्याख्या

अल्लाह तआला का फ़र्मान है:

﴿وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي
الْآخِرَةِ مِنَ الْخُسْرَيْنِ﴾ [१४]

“और जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त कोई अन्य धर्म तलाश करे, तो उसका धर्म हरगिज़ स्वीकार नहीं किया जाएगा।”

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह बयान करते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“क्रयामत के दिन बन्दों के आमाल उपस्थित होंगे। चुनांचे नमाज़ उपस्थित होगी और कहेगी कि ऐ पालनहार! मैं नमाज़ हूँ! अल्लाह तआला फ़रमाएगा: तू ख़ैर पर है। फिर ज़कात उपस्थित होगी और कहेगी कि ऐ पालनहार! मैं ज़कात हूँ! अल्लाह तआला फ़रमाएगा: तू भी ख़ैर पर है। फिर रोज़ा उपस्थित होगा और कहेगा कि ऐ पालनहार! मैं रोज़ा हूँ! अल्लाह तआला फ़रमाएगा: तू भी ख़ैर पर है। इसके बाद बन्दे के शेष आमाल इसी प्रकार उपस्थित होंगे और अल्लाह तआला

फ़रमाएगा: तुमसब ख़ैर पर हो। फिर इस्लाम उपस्थित होगा और कहेगा कि ऐ पालनहार! तू सलाम है और मैं इस्लाम हूँ। अल्लाह तआला फ़रमाएगा: तू भी ख़ैर पर है। आज मैं तेरे कारण से पकड़ करूँगा और तेरे ही कारण प्रदान करूँगा। अल्लाह तआला ने अपनी किताब कुर्आन मजीद में फ़रमाया:

(وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي
الْآخِرَةِ مِنَ الْخَسِرِينَ)

“और जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त कोई अन्य धर्म तलाश करे, तो उसका धर्म हरगिज़ स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह आख़िरत में घाटा उठाने वालों में से होगा।”

इस हदीस को इमाम अहमद ने रिवायत किया है। और सहीह मुस्लिम में आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“जिसने कोई ऐसा काम किया, जिसके बारे में हमारा आदेश नहीं है, तो वह काम मर्दूद (अस्वीकृत) है।” इस हदीस को इमाम अहमद ने भी रिवायत किया है।

किताबुल्लाह की पैरवी करके उसके अतिरिक्त अन्य वस्तुओं से बेनियाज़ होने की अनिवार्यता

अल्लाह तआला का फ़र्मान है:

(وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تَبْيِينًا لِّكُلِّ شَيْءٍ [१५])

“और हमने आपपर यह किताब उतारी है, जिसमें हर चीज़ का स्पष्ट उल्लेख है।”

सुनन नसाई आदि में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ में तौरात का एक पन्ना देखा, तो फ़रमाया:

“ऐ खत्ताब के बेटे! क्या तुम ह़ैरत में पड़े हो! मैं तुम्हारे पास स्पष्ट और उज्ज्वल शरीअत लेकर आया हूँ। यदि मूसा भी जीवित होते और तुम मुझे छोड़कर उनकी पैरवी करने लगते, तो पथभ्रष्ट हो जाते।”

एक दूसरी रिवायत में है:

“यदि मूसा भी जीवित होते, तो उन्हें भी मेरी पैरवी करनी पड़ती।”

यह सुनकर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा:

“मैं अल्लाह से प्रसन्न हूँ उसे अपना पालनकर्ता मानकर, इस्लाम से प्रसन्न हूँ उसे अपना दीन समझकर और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रसन्न हूँ उन्हें अपना नबी मानकर।”

इस्लाम के दावा से निकल जाने का वर्णन

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

(هُوَ سَمَّكُمْ الْمُسْلِمِينَ مِنْ قَبْلُ وَفِي هَذَا) [१६]

“उसी अल्लाह ने तुम्हारा नाम सुसलमान रखा है, इस क़ुर्आन से पहले और इसमें भी।”

हारिस अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमाया:

“मैं तुम्हें उन पाँच बातों का आदेश देता हूँ, जिनका अल्लाह तआला ने मुझे आदेश दिया है: शासक की बात सुनने और उसकी पैरवी करने का, जिहाद का, हिज़्रत का और मुसलमानों की जमाअत से जुड़े रहने का। क्योंकि जो व्यक्ति जमाअत से बालिशत बराबर भी दूर हुआ, उसने अपनी गर्दन से इस्लाम का पट्टा निकाल फेंका। परन्तु यह कि वह जमाअत की ओर पलट आए। और जिसने जाहिलियत की पुकार लगाई, वह जहन्नमी है।” यह सुनकर एक

व्यक्ति ने कहा कि ऐ अल्लाह के पैग़म्बर!
चाहे वह नमाज़ पढ़े और रोज़े रखे?

फरमाया: “हाँ, चाहे वह नमाज़ पढ़े और
रोज़े रखे। अतः ऐ अल्लाह के बन्दो! तुम
उस अल्लाह की पुकार लगाओ, जिसने
तुम्हारा नाम मुसलमान और मोमिन रखा
है।”[१७]

और सहीह बुख़ारी एवं मुस्लिम में है:

“जो जमाअत से बालिशत बराबर भी जुदा
हुआ और इसी अवस्था में मर गया, उसकी
मौत जाहिलियत की मौत होगी।”

तथा सहीह हदीस में है कि पैग़म्बर
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“क्या जाहिलियत की पुकार लगाई जा रही है और मैं तुम्हारे बीच मौजूद हूँ?”

शौखुल इस्लाम अबुल अब्बास इब्ने तैमिया फ़रमाते हैं:

“इस्लाम और कुर्आन के दावे के सिवा हर दावा, चाहे वह नसब हो शहर का हो, क्रौम का हो, मस्लक का हो या पंथ का, सब जाहिलियत की पुकार में सम्मिलित है। बल्कि जब एक मुहाजिर और एक अन्सारी के बीच झगड़ा हो गया और मुहाजिर ने मुहाजिरों को पुकारा और अन्सारी ने अन्सारियों को आवाज़ दी, तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: “क्या जाहिलियत की पुकार लगाई जा रही है, जबकि मैं तुम्हारे बीच

मौजूद हूँ?” और इस बात से आप बहुत अप्रसन्न हुए।” शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया का कलाम समाप्त हुआ।

इस्लाम में सम्पूर्ण रूप से प्रवेश करने और उसके अतिरिक्त अन्य धर्मों के परित्याग की अनिवार्यता

अल्लाह तआला का फ़र्मान है:

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً) [१८]

“ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे-पूरे प्रवेश कर जाओ।”

तथा फ़रमाया:

(أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ ءَامَنُوا بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِنْ قَبْلِكَ) [१९]

“क्या आपने उन्हें नहीं देखा, जिनका दावा तो यह है कि जो कुछ आपपर और जो कुछ आपसे पहले उतारा गया, उसपर उनका ईमान है।”

तथा अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ [٢٠]

“निःसंदेह जिन लोगों ने अपने धर्म को अलग-अलग कर दिया और गुट-गुट बन गए, आपका उनसे कोई सम्बन्ध नहीं।”

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा अल्लाह तआला के इस कथन:

(يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ) [٢١]

“जिस दिन कुछ चेहरे चमक रहे होंगे और कुछ काले।”

की व्याख्या में कहते हैं:

“अहले सुनन्त वल-जमाअत के चेहरे उज्ज्वल होंगे और अहले बिद्अत तथा साम्प्रदायिक लोगों के चेहरे काले होंगे।”

अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है, वह बयान करते हैं कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“मेरी उम्मत पर बिल्कुल वैसा ही समय आएगा, जैसा कि बनी इस्लार्इल पर आया था। यहाँ तक कि यदि उनमें से किसी ने अपनी माँ के साथ खुल्लम-खुल्ला

बलत्कार किया होगा, तो मेरी उम्मत में भी इस प्रकार का व्यक्ति होगा, जो ऐसा करेगा। तथा बनी इस्राईल बहत्तर फ़िक्रों (दलों) में बट गए थे, किन्तु मेरी यह उम्मत तेहत्तर फ़िक्रों में बट जाएगी। उनमें से एक के अतिरिक्त बाक़ी सब नरकवासी होंगे।” सहाबा ने पूछा कि ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! वह नजात पाने वाला फ़िक्र कौन सा होगा? तो आपने फ़रमाया: “वह जो उस मार्ग पर चले, जिसपर मैं हूँ और मेरे सहाबा हैं।”

जो मोमिन अल्लाह तआला से मुलाक़ात की आशा रखता है, उसे इस स्थान पर सादिक़ व मस्टूक़ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हृदीस विशेष रूप से आपके

फ़र्मान “जिस तरीक़े पर मैं हूँ और मेरे साथी हैं” पर ग़ौर करना चाहिए। यह ह़दीस कितनी बड़ी नसीहत है, उन दिलों के लिए जिनमें ज़िन्दगी की ज़रा भी रमक़ बाक़ी है। इस ह़दीस को इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है तथा उन्होंने इसे अबू हरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु के वास्ते से रिवायत करके सहीह कहा है। अल्बत्ता इस रिवायत में जहन्नम का उल्लेख नहीं है। यह ह़दीस मुसद्द अहमद और सुनन अबू दाऊद में मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के तरीक़े से वर्णित है, जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह फ़र्मान भी है:

“मेरी उम्मत में एक ऐसी क़ौम प्रकट होगी, जिनकी नसों में ख़्वाहिशात इस प्रकार घुस जाएंगी, जिस प्रकार पागल कुत्ते के काटने से पैदा होने वाली बीमारी काटे हुए व्यक्ति की नसों में प्रवेश कर जाती है। यहाँ तक कि उसके शरीर की कोई नस और कोई जोड़ उसके प्रभाव से सुरक्षित नहीं रहता।”

इससे पहले पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह फ़र्मान उल्लिखित हो चुका है कि:

“इस्लाम में जाहिलियत का तरीक़ा ढूँढने वाला (अल्लाह के निकट तीन सबसे नापसंदीदा लोगों में से है।)”

बिद्अत बड़े-बड़े गुनाहों से भी अधिक सख्त

अल्लाह तआला का फ़र्मान है:

﴿إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ﴾ [२२]

“अल्लाह तआला अपने साथ शिर्क किए जाने को क्षमा नहीं करेगा और इसके अतिरिक्त जिसे चाहेगा, क्षमा कर देगा।”

तथा अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا لِيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ﴾ [२३]

“और उससे बढ़कर अत्याचारी कौन होगा, जो अल्लाह तआला पर बिना किसी प्रमाण के झूठा आरोप लगाता है।”

तथा अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

(لِيَحْمِلُوا أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمِنْ أَوْزَارِ الَّذِينَ يُضِلُّونَهُمْ

بِغَيْرِ عِلْمٍ إِلَّا سَاءَ مَا يَزُرُونَ) [२४]

“ताकि क़यामत के दिन यह लोग अपने पूरे बोझ के साथ ही उन लोगों के बोझ के भी भागीदार हों, जिन्हें अनजाने में पथ-भ्रष्ट करते रहे। देखो तो कैसा बुरा बोझ उठा रहे हैं।”

और सहीह बुखारी में है कि पैग़म्बर
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़्वारिज
के विषय में फ़रमाया:

“उन्हें जहाँ भी पाओ, क़त्ल कर दो। यदि
मैंने उन्हें पाया, तो क़ौमे आद के क़त्ल के
समान क़त्ल करूँगा।” [२५]

तथा सहीह (मुस्लिम) में है कि पैग़म्बर
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अत्याचारी
शासकों को क़त्ल करने से रोका है, जब
तक वह नमाज़ पढ़ते हों।”

और जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु
अन्हु से वर्णित है कि एक आदमी ने ख़ैरात
दिया। उसके बाद लोगों ने ख़ैरात देना

आरम्भ कर दिया, तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“जिसने इस्लाम में कोई अच्छा तरीका निकाला, तो उसे उसका अज़्र –बदला- मिलेगा और उन लोगों का अज़्र भी, जो इसके बाद उसपर अमल करेंगे। किन्तु अमल करने वालों के अज़्र में कोई कमी नहीं होगी। और जिसने इस्लाम में कोई बुरा तरीका अविष्कार किया, तो उसपर उसका गुनाह होगा और उन लोगों का भी गुनाह होगा, जो उसपर अमल करेंगे। किन्तु इन अमल करने वालों के गुनाह में कोई कमी नहीं होगी।” इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

तथा सहीह मुस्लिम में अबू हरैरा
रज़ियल्लाहु अन्हु के द्वारा इसी के समान
एक अन्य हदीस वर्णित है, जिसके शब्द
यह हैं:

“जिसने किसी हिदायत –मार्गदर्शन- की
ओर बुलाया..... और जिसने किसी
गुमराही की ओर बुलाया।”

अल्लाह तआला बिद्अती की तौबा
स्वीकार नहीं करता

यह बात अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की
(मर्फुअ) हदीस और हसन बसरी की मुर्सल
हदीस से प्रमाणित है। इब्ने वज़ज़ाह ने
अय्यूब से बयान किया है कि उन्होंने
फ़रमाया कि हमारे बीच एक आदमी था,

जो कोई असत्य विचार रखता था। फिर उसने वह विचार त्याग दिया, तो मैं मुहम्मद बिन सीरीन के पास आया और कहा: क्या आपको पता है कि अमुक ने अपना विचार त्याग दिया है?

तो उन्होंने कहा: अभी देखो तो सही, वह किस दिशा में जाता है? ऐसे लोगों के सम्बन्ध में जो हदीस आई है, उसका यह अन्तिम भाग उसके प्रारंभिक भाग से अधिक सख्त है कि “वह इस्लाम से निकल जाएंगे, फिर उसकी ओर पुनः वापस नहीं लौटेंगे।”

इमाम अहमद बिन हम्बल –रहमतुल्लाहि अलैहि- से इसका अर्थ पूछा गया, तो

आपने फ़रमाया: “ऐसे आदमी को तौबा की तौफ़ीक़ नहीं होती।”

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ..... وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ
वर्णन का

अल्लाह तआला का फ़र्मान है:

(يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنزِلَتِ
 التَّوْرَةُ وَالْإِنْجِيلُ إِلَّا مِنْ بَعْدِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ٦٥
 هَآئِنْتُمْ هَؤُلَاءِ حُجَجْتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَاجُّونَ
 فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ

لَا تَعْلَمُونَ ٦٦ مَا كَانَ إِبْرَاهِيمَ يَهُودِيًّا وَلَا
 نَصْرَانِيًّا وَلَكِنْ كَانَ حَنِيفًا مُسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ

المُشْرِكِينَ) [٢٤]

“ऐ अहले किताब (यहूद एवं नसारा)! तुम इब्राहीम के विषय में क्यों झगड़ते हो,

हालाँकि तौरात और इन्जील तो उनके बाद उतरी हैं? क्या फिर भी तुम नहीं समझते? सुनो! तुम उसमें झगड़ चुके हो, जिसका तुम्हें ज्ञान था। फिर तुम उस बात में क्यों झगड़ते हो, जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं? और अल्लाह तआला जानता है तथा तुम नहीं जानते। इब्राहीम न तो यहूदी थे, न ईसाई। बल्कि वह तो एकांत और शूद्ध मुसलमान थे और मुश्रिक –अनेकेश्वरवादी- नहीं थे।”

और अल्लाह तआला का फ़र्मान है:

﴿وَمَنْ يَرْغَبْ عَنْ مِلَّةِ إِبْرَاهِيمَ إِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهُ
وَلَقَدْ صَطَفَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ
الصَّالِحِينَ﴾ [۲۷]

“और इब्राहीम के धर्म से वही मुँह मोड़ेगा, जो मूर्ख होगा। हमने तो उन्हें दुनिया में भी चुन लिया था और आखिरत में भी वह सदाचारियों में से हैं।”

इस विषय में ख्वारिज से सम्बन्धित हदीस मौजूद है, जो गुज़र चुकी है। तथा सहीह हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“अबू फ़लाँ के आल (अर्थात् अमुक व्यक्ति के परिजन) मेरे दोस्त नहीं। मेरे दोस्त मुत्तक़ी (संयमी, ईशभय रखने वाले) लोग हैं।”

और सहीह हदीस में अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, अल्लाह के पैग़म्बर

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वर्णन किया गया: किसी सहाबी ने कहा कि मैं गोश्त नहीं खाऊँगा, दूसरे ने कहा कि मैं रात भर नमाज़ पढ़ूँगा और नहीं सोऊँगा, तीसरे ने कहा कि मैं औरतों के समीप नहीं जाऊँगा, चौथे ने कहा कि मैं लगातार रोज़ा रखूँगा और नागा नहीं करूँगा। इनकी बातें सुनकर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“किन्तु मेरा हाल यह है कि मैं रात को नमाज़ पढ़ता हूँ और सोता भी हूँ, रोज़ा रखता हूँ और नागा भी करता हूँ तथा पत्नियों के पास भी जाता हूँ और गोश्त भी खाता हूँ। तो जिसने मेरी सुन्नत से मुँह मोड़ा, वह मुझसे नहीं।”

गौर कीजिए कि जब कुछ सहाबा ने इबादत के उद्देश्य से दुनिया से कट जाने की इच्छा प्रकट की, तो उनके बारे में यह कठोर बात कही गई और उनके काम को सुन्नत से मुँह मोड़ना बताया गया। ऐसे में अन्य बिद्अतों और सहाबा के अतिरिक्त अन्य लोगों के बारे में आपका क्या विचार है?

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا

وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا का वर्णन

अल्लाह तआला का फ़र्मान है:

(فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ
النَّاسَ عَلَيْهَا)

لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٤﴾

“आप एकांत होकर अपना मुँह दीन की ओर कर लें। (यही) अल्लाह तआला की वह फ़ितरत (प्रकृति) (है), जिस पर उसने लोगों को पैदा किया है। अल्लाह की सृष्टि को बदलना नहीं है। यही सीधा दीन है, किन्तु अधिकांश लोग नहीं जानते।”

तथा फ़रमाया:

﴿وَوَصَّي بِهَا إِبْرَاهِيمَ وَيَعْقُوبَ يُبْنِيَّ إِنَّ اللَّهَ
اصْطَفَىٰ لَكُمْ الدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ
مُسْلِمُونَ﴾ ﴿٢٥﴾

“और इसी इब्राहीमी धर्म की वसीयत इब्राहीम ने और याकूब ने अपनी-अपनी

संतान को की कि ऐ मेरे बेटो! अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए इस धर्म को पसन्द कर लिया है। तो सावधान! तुम मुसलमान होकर ही मरना।”

तथा अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

(ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنْ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ

مِنَ الْمُشْرِكِينَ) [30]

“फिर हमने आपकी ओर यह वदह्य भेजी कि आप मिल्लते इब्राहीमी का अनुसरण कीजिए, जो कि मुवद्दिहद (एकेश्वरवादी) थे और मुश्रिकों में से न थे।”

इब्रे मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“प्रत्येक नबी के अम्बिया में से कुछ दोस्त होते हैं और उनमें से मेरे दोस्त इब्राहीम हैं, जो मेरे बाप और मेरे पालनहार के ख़लील (दोस्त) हैं।” इसके बाद आपने यह आयत पढ़ी:

(إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهَذَا النَّبِيُّ
وَالَّذِينَ

ءَامَنُوا وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ) [३१]

“सबसे अधिक इब्राहीम से निकट वह लोग हैं, जिन्होंने उनका अनुसरण किया और

यह नबी और वह लोग जो ईमान लाए,
और मोमिनों का दोस्त अल्लाह है।”

इस हदीस को तिर्मिज़ी ने रिवायत किया
है।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है,
वह बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“अल्लाह तआला तुम्हारा शरीर और
तुम्हारा धन नहीं देखता, बल्कि तुम्हारा
दिल और तुम्हारा कार्य देखता है।”

बुख़ारी एवं मुस्लिम में इब्ने मसूऊद
रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं
कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम
ने फ़रमाया:

“मैं हौज़े-कौसर पर तुम सबसे पहले उपस्थित रहूँगा। मेरे पास मेरी उम्मत के कुछ लोग उपस्थित होंगे। जब मैं उन्हें देने के लिए बढ़ूँगा, तो वह मुझसे रोक दिए जाएंगे। मैं कहूँगा: ऐ मेरे पालनहार! यह तो मेरी उम्मत के लोग हैं! मुझसे कहा जाएगा कि आपको पता नहीं कि आपके बाद इन्होंने क्या-क्या बिद्अतें आविष्कार कर ली थीं।”

और बुखारी एवं मुस्लिम में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“मेरी इच्छा थी कि हम अपने भाईयों को देख लेते”

सहाबा ने कहा कि ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! क्या हम आपके भाई नहीं? फ़रमाया: “तुम मेरे असहाब (सार्थी) हो। मेरे भाई वह हैं, जो अब तक नहीं आए।” सहाबा ने कहा कि ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! आपकी उम्मत के जो लोग अभी तक पैदा नहीं हुए, आप उन्हें कैसे पहचान लेंगे?

फ़रमाया: “क्या अति श्वेत और काले घोड़ों के बीच अगर किसी का चमकदार माथा और सफ़ेद पाँव वाला घोड़ा हो, तो क्या वह अपना घोड़ा नहीं पहचान पायेगा?” उन्होंने उत्तर दिया: हाँ, क्यों नहीं? तो आपने फ़रमाया: “मेरी उम्मत भी क़यामत के दिन इस प्रकार उपस्थित होगी कि बुज़ु के प्रभाव से उनके चेहरे और अन्य बुज़ु के स्थान चमक रहे होंगे। मैं हौज़े कौसर पर

पहले से उनकी प्रतीक्षा कर रहा हूँगा।
सुनो! क़यामत के दिन कुछ लोग मेरे हौज़े
कौसर से ऐसे ही धुतकार दिए जाएंगे,
जिस प्रकार पराया ऊँट धुत्कार दिया
जाता है। मैं उन्हें आवाज़ दूँगा कि सुनो!
इधर आओ! तो मुझसे कहा जाएगा कि यह
वह लोग हैं, जिन्होंने आपके बाद दीन में
परिवर्तन की थी। मैं कहूँगा कि फिर तो दूर
हो जाओ! दूर हो जाओ!”

और सहीह बुख़ारी में है कि पैग़म्बर
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

जिस समय मैं हौज़े कौसर पर रहूँगा, एक
टोली प्रकट होगी! जब मैं उन्हें पहचान
लूँगा, तो मेरे और उनके बीच से एक
आदमी निकलेगा और उनसे कहेगा: इधर

आओ! मैं पूछूँगा: कहाँ? वह कहेगा:
 अल्लाह की क्रसम जहन्नम की ओर! मैं
 कहूँगा: इनका क्या मामला है? वह कहेगा:
 यह वह लोग हैं, जो आपके बाद दीन से
 फिर गए थे। फिर इसके बाद एक अन्य
 टोली प्रकट होगी। –इस टोली के बारे में
 भी आपने वही बात कही, जो पहली टोली
 के बारे में कही थी।- इसके बाद आपने
 फ़रमाया: इनमें से मोक्ष प्राप्त करने वालों
 की संख्या भटके हुए ऊँटों के समान बहुत
 ही कम होगी।”

और बुख़ारी एवं मुस्लिम में इब्ने अब्बास
 रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ह़दीस है कि
 पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने
 फ़रमाया:

उस समय मैं भी वही कहूँगा, जो अल्लाह के नेक (सदाचारी) बन्दे –ईसा अलैहिस्सलाम- ने कहा था:

(وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ

شَهِيدٌ) [३२]

“जब तक मैं उनके बीच रहा, उनपर गवाह रहा। फिर जब तूने मुझे उठा लिया, तो तू ही उनसे अवगत रहा और तू हर चीज़ की पूरी सूचना रखता है।”

तथा बुख़ारी एवं मुस्लिम में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मर्फूअन रिवायत है:

“हर बच्चा इस्लाम की फ़ितरत पर पैदा होता है। फिर उसके माँ-बाप उसे ईसाई, यहूदी या मजूसी बना देते हैं। जिस प्रकार कि चौपाया सम्पूर्ण –बे ऐब- चौपाया जनता है। क्या तुम उनमें से कोई चौपाया ऐसा पाते हो, जिसके कान कटे-फटे हों? यहाँ तक कि तुम ही स्वयं उसके कान चीर-काट देते हो। इसके बाद अबू हुँरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह आयत पढ़ी:

[३३] (فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا)

“अल्लाह की वह फ़ितरत, जिसपर उसने लोगों को पैदा किया है।”

हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं:

“लोग पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व
 सल्लम से ख़ैर –भलाई- के विषय में प्रश्न
 करते थे और मैं आपसे शर् –बुराई- के बारे
 में पूछता था, इस डर से कि मैं उसका
 शिकार न हो जाऊँ। मैंने कहा कि ऐ
 अल्लाह के पैग़म्बर! हम जाहिलियत और
 बुराई में पड़े हुए थे। फिर अल्लाह तआला
 ने हमें ख़ैर –भलाई- की नेमत से
 सम्मानित किया। तो क्या इस ख़ैर के बाद
 भी फिर कोई बुराई होगी? तो आपने
 फ़रमाया: हाँ! मैंने कहा: क्या इस बुराई के
 बाद फिर ख़ैर का ज़माना आयेगा?
 फ़रमाया: “हाँ, किन्तु उसमें खोट होगी।”
 मैंने कहा कि कैसी खोट होगी? आपने
 फ़रमाया: “कुछ लोग ऐसे होंगे, जो मेरी
 सुन्नत और हिदायत को छोड़कर दूसरों का

तरीक़ा अपनायेंगे। तुम्हें उनके कुछ काम उचित मालूम होंगे और कुछ काम अनुचित।” मैंने कहा: क्या इस ख़ैर के बाद फिर बुराई प्रकट होगी? फ़रमाया: हाँ, भयानक फ़ित्ने और नरक की ओर बुलाने वाले लोग पैदा होंगे। जो उनकी सुनेगा, उसे नरक में झोंक देंगे।”, मैंने कहा: ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! आप हमें उनके औसाफ़ बता दें। फ़रमाया: “वह हममें से ही होंगे और हमारी ही भाषा में बात करेंगे।” मैंने कहा: ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! यदि यह समय मुझे मिल जाए, तो आप मुझे क्या आदेश देते हैं? फ़रमाया: मुसलमानों की जमाअत और उनके इमाम के साथ जुड़े रहना।” मैंने कहा कि अगर उस समय मुसलमानों की कोई जमाअत

और उनका इमाम न हो, तो क्या करूँ?
फ़रमाया: “फिर इन सभी फ़िक्रों से अलग
रहना, चाहे तुम्हें किसी पेड़ की जड़ से
चिमटना ही क्यों न पड़ जाए, यहाँ तक
कि इसी हालत में तुम्हारी मृत्यु हो जाए।”

इस हदीस को बुख़ारी एवं मुस्लिम ने
रिवायत किया है, किन्तु मुस्लिम की
रिवायत में इतनी वृद्धि है:

“इसके बाद क्या होगा? फ़रमाया: “फिर
दज्जाल प्रकट होगा। उसके साथ एक नहर
और एक जहन्नम होगी। जो उसकी जहन्नम
में प्रवेश करेगा, उसका अज़्र साबित हो
जाएगा और गुनाह माफ हो जाएंगे। और
जो उसकी नहर में प्रवेश करेगा, उसका
गुनाह वाजिब और अज़्र समाप्त हो

जाएगा।” मैंने कहा: फिर इसके बाद क्या होगा? फरमाया: “इसके बाद क़यामत आ जाएगी।”

अबुल आलिया फ़रमाते हैं:

“इस्लाम की शिक्षा प्राप्त करो। जब इस्लाम की शिक्षा प्राप्त कर लो, तो इससे मुँह न मोड़ो। सीधे मार्ग पर चलते रहो, क्योंकि यही इस्लाम है। इसे छोड़कर दाएं-बाएं न मुड़ो। और अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत पर अमल करते रहो और असत्य और भ्रष्ट अक्रायद और बिद्अतों के निकट न जाओ।”

अबुल आलिया –रहमतुल्लाहि अलैहि- के इस कथन पर ग़ौर करो। कितना ऊँचा

कथन है! और उनके उस समय का स्मरण करो, जिसमें वह इन भ्रष्ट अक्राइद एवं बिद्अतों से सावधान कर रहे हैं कि जो इन ग़लत अक्राइद एवं बिद्अतों में पड़ जाए, वह मानो कि इस्लाम से फिर गया। किस प्रकार उन्होंने इस्लाम की व्याख्या सुन्नत –हदीस- से की है। उनका बड़े-बड़े और विद्वान ताबेईन के बारे में किताब व सुन्नत के दायरे से निकलने का डर अल्लाह तआला के इस फ़र्मान का अर्थ स्पष्ट कर देता है:

(إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْلِمْتُ قَالَ أَسْلَمْتُ لِرَبِّ
 الْعَالَمِينَ) [३४]

“जब उनके पालनहार ने उनसे कहा कि आज्ञाकारी हो जाओ, तो उन्होंने कहा कि

मैं अल्लाह रब्बुल आलमीन का आज्ञाकारी हो गया।”

और इस फ़र्मान के अर्थ को भी:

﴿وَوَصَّىٰ بِهَا إِبْرَاهِيمَ بَنِيهِ وَيَعْقُوبُ يُبْنِي إِنَّ اللَّهَ
أَصْطَفَىٰ لَكُمْ الدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ
مُسْلِمُونَ﴾ [३५]

“इसी बात की वसीयत इब्राहीन ने और याकूब ने अपनी-अपनी संतान को की कि ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए इस धर्म को पसन्द कर लिया है, तो तुम मुसलमान होकर ही मरना।”

तथा इस फ़र्मान के अर्थ को भी:

﴿وَمَنْ يَرِغَبْ عَنِ مِلَّةِ إِبْرَاهِيمَ إِلَّا مَنْ سَفِهَ
نَفْسَهُ﴾ [३६]

“और इब्राहीम के धर्म से वही मुँह मोड़ेगा,
जो मूर्ख होगा।”

इसी प्रकार की और भी मूल बातें ज्ञात होंगी, जो मूल आधार की बुनियाद रखती हैं, परन्तु लोग इनसे निश्चेत हैं। अबुल-आलिया के कथन पर गौर करने से इस अध्याय में वर्णित हदीसों और इन जैसी अन्य हदीसों का भी अर्थ स्पष्ट हो जाएगा। परन्तु जो व्यक्ति यह और इन जैसी अन्य आयतों और हदीसों को पढ़कर गुज़र जाए और इस बात से संतुष्ट हो कि वह इन खतरों का शिकार नहीं होगा और सोचे कि इसका सम्बन्ध ऐसे लोगों से है, जो कभी थे और अब समाप्त हो गए हैं, तो जान जाइये कि यह व्यक्ति भी अल्लाह तआला

की पकड़ से निडर है और अल्लाह की पकड़ से वही लोग निडर होते हैं, जो घाटा उठाने वाले हैं।

और अब्दुल्लाह बिन मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक लकीर खींची और फ़रमाया: “यही अल्लाह का सीधा मार्ग है।” फिर उस लकीर के दाएं-बाएं कई लकीरें खींचीं और फ़रमाया: “यह ऐसे मार्ग हैं, जिनमें से हर मार्ग पर शैतान बैठा हुआ है और अपनी ओर बुला रहा है।” इसके बाद आपने इस आयत की तिलावत की:

﴿وَأَنَّ هَذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ وَلَا تَتَّبِعُوا
السُّبُلَ

فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَن سَبِيلِهِ ذَلِكُمْ وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ

تَتَّقُونَ ﴿٣٩﴾

“और यही मेरा सीधा मार्ग है, तो तुम इसी पर चलो, और दूसरे मार्गों पर मत चलो कि वह तुम्हें अल्लाह के मार्ग से अलग कर देंगे, इसी का अल्लाह तआला ने तुमको ताकीदी आदेश दिया है ताकि तुम परहेज़गार (ईशभय रखने वाले) बनो।”

इस हदीस को इमाम अहमद और नसाई ने रिवायत किया है।

इस्लाम की अजनबियत और गुरबा
(अजनबियों) की विशेषता

अल्लाह तआला का फ़र्मान है:

(فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِنْ قَبْلِكُمْ أُولُوا بَقِيَّةَ يَنَّهُونَ
عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّنْ أَنْجَيْنَا مِنْهُمْ
وَاتَّبَعُ

الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أَتَرَفُوا فِيهِ وَكَانُوا
مُجْرِمِينَ) [34]

“पस कयों न तुमसे पहले लोगों में ख़ैर
वाले हुए, जो धरती पर दंगा फैलाने से
रोकते, सिवाय उन थोड़े लोगों के, जिन्हें
हमने उनमें से नजात दी थी।”

और अबू हरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से
मर्फूअन वर्णित है:

“इस्लाम अजनबियत की अवस्था में
आरम्भ हुआ था और शीघ्र ही पहले ही के

समान अजनबी हो जाएगा। ऐसे में शुभ सूचना है गुरबा (अजनबियों) के लिए।”

इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है तथा इसे इमाम अहमद ने अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु के द्वारा रिवायत किया है, जिसमें यह वृद्धि है:

“कहा गया कि ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! गुरबा कौन लोग हैं? तो आपने फ़रमाया: “अल्लाह के मार्ग में अपने वतन तथा ख़ानदान को छोड़ देने वाले।”

और दूसरी रिवायत में है:

“गुरबा वह लोग हैं, जो उस समय नेक और सदाचारी होंगे, जब अधिकांश लोग बिगड़ चुके होंगे।”

इस हदीस को इमाम अहमद ने सअद बिन अबी वक्रकास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है, जिसमें है:

“पस उस समय खुशख़बरी हो गुरबा के लिए, जब लोगों के अन्दर फ़साद और बिगाड़ आ जाएगा।”

इमाम तिर्मिज़ी ने कसीर बिन अब्दुल्लाह के वास्ते से रिवायत किया है, वह अपने बाप के वास्ते से अपने दादा से रिवायत करते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“खुशख़बरी है उन ग़ुरबा के लिए, जो मेरी उन सुन्नतों को सुधारेंगे, जिन्हें लोग बिगाड़ चुके होंगे।”

और अबू उमय्या से रिवायत है, वह कहते हैं कि मैंने अबू सअलबा खु-शनी रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि इस आयत के बारे में आप क्या कहते हैं:

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسُكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ مَن ضَلَّ إِذَا أَهْتَدَيْتُمْ) [३९]

“ऐ ईमान वालो! तुम अपनी चिन्ता करो। यदि तुम सीधे मार्ग पर चलोगे, तो जो पथ-भ्रष्ट है, उससे तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं होगा।”

तो अबू सअलबा ने कहा कि अल्लाह की कसम! इस आयत के बारे में मैंने सबसे अधिक जानकार अर्थात् अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न किया था, तो आपने फ़रमाया:

“बल्कि तुम आपस में एक दूसरे को भलाई का आदेश देते और बुराई से रोकते रहो। यहाँ तक कि जब देख लो कि लालच का अनुपालन किया जा रहा है, ख्वाहिशात की पैरवी की जा रही है, दुनिया को प्रधानता दी जा रही है और हर व्यक्ति अपने विचारधारा पर मगन है, तो अपनी चिन्ता करो और जन साधारण की चिन्ता अपने मन से निकाल दो। क्योंकि तुम्हारे बाद ऐसे दिन आने वाले हैं, जिनमें दीन

पर धैर्य से जमे रहने वाला आग का अंगारा पकड़ने वाले के समान होगा और उनमें अमल करने वाले को ऐसे पचास आदमियों के बराबर अज़्र मिलेगा, जो तुम्हारे ही जैसा अमल करने वाले हैं। हमने कहा कि क्या हममें से पचास आदमी या उनमें से पचास आदमी? तो आपने फ़रमाया: “बल्कि तुममें से।” इस ह़दीस को अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

इब्ने वज़ज़ाह ने इसी अर्थ की ह़दीस इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के तरीक़ से रिवायत की है:

“तुम्हारे बाद ऐसे दिन आयेंगे, जिनमें धैर्य करने वाले और आज तुम जिस दीन पर

हो, उसपर जमे रहने वाले को तुम्हारे पचास आदमियों के बराबर पुण्य मिलेगा।”

इसके बाद इब्ने वज़ज़ाह ने फ़रमाया कि हमसे मुहम्मद बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे असद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उययना ने अस्लम बसरी से और उन्होंने हसन के भाई सईद से रिवायत की, वह मर्फूअन रिवायत करते हुए कहते हैं: मैंने सुफ़यान से कहा: क्या सईद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मर्फूअन रिवायत करते हैं? तो उन्होंने कहा: हाँ, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया:

“आज तुम अपने पालनहार के शुद्ध और स्पष्ट मार्ग पर हो, भलाई का आदेश देते हो, बुराई से रोकते हो और अल्लाह के मार्ग में जिहाद करते हो। अभी तक तुम्हारे अन्दर दो नशे प्रकट नहीं हुए हैं; एक जिहालत का नशा और दूसरा जीवन से प्यार का नशा। परन्तु शीघ्र ही तुम्हारी यह हालत बदल जायेगी। तुम न भलाई का आदेश दोगे, न बुराई से रोकोगे और न ही अल्लाह के मार्ग में जिहाद करोगे। तुम्हारे अन्दर दोनों नशे प्रकट जो जाएंगे। उस समय किताब एवं सुन्नत पर जमे रहने वाले को पचास आदमियों के बराबर पुण्य मिलेगा।” पूछा गया कि क्या उनके पचास आदमी? आपने फ़रमाया: “नहीं बल्कि तुम्हारे पचास आदमियों के बराबर।”

इब्ने वज़्ज़ाह ने एक दूसरी सनद से मुआफ़री से रिवायत किया है, वह बयान करते हैं कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“ख़ुशख़बरी है उन ग़ुरबा के लिए कि जब किताबुल्लाह को छोड़ दिया जाएगा, तो वह उसपर अमल करेंगे और जब सुन्नत की रोशनी बुझा दी जाएगी, तो वह उसपर अमल करके ज़िन्दा करेंगे।”

बिद्अतों पर चेतावनी

इर्बाज़ बिन सारिया रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह बयान करते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें एक बड़ी ही प्रभावशाली नसीहत की, जिससे

हमारे दिल काँप उठे और आँखें आँसू बहाने लगीं। हमने कहा कि ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! यह तो अल-विदाई नसीहत जान पड़ती है। आप हमें वसीयत कीजिए। तो आपने फ़रमाया:

“मैं तुम्हें अल्लाह से डरने तथा अमीर की बात मानने और सुनने की वसीयत करता हूँ। भले ही कोई दास तुम्हारा अमीर – शासक- बन जाए। तुममें से जो व्यक्ति जीवित रहेगा, वह बहुत मतभेद देखेगा। ऐसी अवस्था में तुम मेरी सुन्नत और मेरे बाद हिदायत से सम्मानित खुलफ़ाये राशिदीन का तरीक़ा अपनाए रखना और उसे दृढ़ता से थामे रहना और दीन में नई आविष्कारित बिद्अतों से बचे रहना।

क्योंकि हर बिद्‌अत पथभ्रष्टता है।” इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और हसन कहा है।

और हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, उन्होंने फ़रमाया:

“हर वह इबादत जिसे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम ने इबादत न समझा हो, उसे तुम भी इबादत न समझो। क्योंकि उन्होंने बाद में आने वालों के लिए किसी बात की गुन्जाइश नहीं छोड़ी है। अतः ऐ कारियों की जमाअत! अल्लाह तआला से डरो और अपने असलाफ़ –पूर्वजों- के तरीक़े पर गमन रहो।” इसे इमाम अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

और इमाम दारिमी कहते हैं कि हमें हकम बिन मुबारक ने सूचना दी, हकम बिन मुबारक कहते हैं कि हमसे अम्र बिन यह्या ने बयान किया, अम्र बिन यह्या कहते हैं कि मैंने अपने बाप से सुना, वह अपने बाप से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फ़रमाया: हम नमाज़े फ़ज्र से पहले अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु के द्वार पर बैठ जाते और जब वह घर से निकलते, तो उनके साथ मस्जिद रवाना होते। एक दिन की बात है कि अबू मूसा अश्शरी रज़ियल्लाहु अन्हु आए और कहा: क्या अबू अब्दुर्रहमान (अब्दुल्लाह बिन मसूद) निकले नहीं? हमने उत्तर दिया: नहीं। यह सुनकर वह भी हमारे साथ बैठ गए। यहाँ तक कि इब्रे मसूद बाहर निकले तो

हमसब उनकी ओर आगे बढ़े। अबू मूसा अश्अरी उनसे मुखातिब हुए और कहा: ऐ अबू अब्दुर्रहमान! मैं अभी-अभी मस्जिद में एक नई बात देखकर आ रहा हूँ। हालाँकि जो बात मैंने देखी है, वह अल्-हम्दुलिल्लाह ख़ैर ही है। इब्रे मस्ऊद ने कहा कि वह कौन-सी बात है? अबू मूसा अश्अरी ने कहा कि अगर ज़िन्दगी रही, तो शीघ्र ही आप भी देख लेंगे। उन्होंने कहा: वह बात यह है कि कुछ लोग नमाज़ की प्रतीक्षा में मस्जिद के भीतर हल्के बनाए बैठे हैं। उनसब के हाथों में कंकरियाँ हैं और हर हल्के में एक-एक आदमी नियुक्त है, जो उनसे कहता है कि सौ बार अल्लाहु अक्बर कहो, तो सब लोग सौ बार अल्लाहु अक्बर कहते हैं। फिर कहता है कि

सौ बार ला-इलाहा इल्लल्लाह कहो, तो सब लोग सौ बार ला-इलाहा इल्लल्लाह कहते हैं। फिर कहता है कि सौ बार सुब्हानल्लाह कहो, तो सब लोग सौ बार सुब्हानल्लाह कहते हैं! इब्ने मस्ऊद ने कहा कि आपने उनसे क्या कहा? अबू मूसा ने जवाब दिया कि आपके विचार की प्रतीक्षा में मैंने उनसे कुछ नहीं कहा। इब्ने मस्ऊद ने फ़रमाया कि आपने उनसे यह क्यों नहीं कहा कि तुम अपने गुनाह शमार करो और फिर इस बात का ज़िम्मा ले लेते कि उनकी कोई भी नेकी नष्ट नहीं होगी।

यह कहकर इब्ने मस्ऊद मस्जिद की ओर रवाना हुए और हमभी उनके साथ चल पड़े। मस्जिद पहुँचकर इब्ने मस्ऊद उन

हल्कों में से एक हल्के के पास खड़े हुए और फ़रमाया: तुम लोग क्या कर रहे हो? उन्होंने जवाब दिया कि ऐ अबू अब्दुर्रहमान? यह कंकरियाँ हैं, जिनपर हम तक्बीर, तह्लील और तस्बीह गिन रहे हैं। इब्रे मसूऊद ने फ़रमाया: इसके बजाय तुम अपने गुनाह गिनो और मैं इस बात का ज़िम्मा लेता हूँ कि तुम्हारी कोई भी नेकी नष्ट नहीं होगी। तुम्हारी ख़राबी हो ऐ उम्मत मुहम्मद! अभी तो तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा बड़ी संख्या में उपस्थित हैं, अभी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के छोड़े हुए कपड़े नहीं फटे हैं, आपके बर्तन नहीं टूटे हैं और तुम इतनी जल्दी तबाही के शिकार हो गये? क़सम है उस ज़ात की, जिसके

हाथ में मेरी जान है! तुम या तो एक ऐसी शरीअत पर चल रहे हो, जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत से –नऊज़ु बिल्लाह- श्रेष्ठ है या फिर तुम गुमराही (पथ-भ्रष्टता) का द्वार खोल रहे हो। उन्होंने कहा कि ऐ अबू अब्दुर्रहमान! अल्लाह की क्रसम इस काम से ख़ैर के सिवाय हमारा कोई और उद्देश्य न था। तो इब्ने मसूद ने फरमाया: ऐसे कितने ख़ैर के आकांक्षी हैं, जो ख़ैर तक कभी नहीं पहुँच पाते। चुनांचे अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें बताया है कि एक क्रौम ऐसी होगी, जो कुर्आन पढ़ेगी, किन्तु कुर्आन उनके गले से नीचे नहीं उतरेगा। अल्लाह की क्रसम!

क्या पता कि उनमें से अधिकतर शायद तुम्हीं में से हो।

यह बातें कहकर इब्ने मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वहाँ से वापस आ गये।

अम्र बिन सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि इन हल्कों के अधिकांश लोगों को हमने देखा कि नहरवान की वड़ाई में वह ख़वारिज के गिरोह में शामिल होकर हमसे नेज़ा ज़नी कर रहे थे।

अल्लाह तआला ही सहायक और सहयोगी है और उसी पर हमारा भरोसा है।

وصلی اللہ وسلم علی سیدنا محمد و علی آلہ و
صحابہ أجمعین.

अनुवादक

(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)

atazia@gamil.com

[१] सूरह अल-माइदा: ३

[२] सूरह यूनुस: १०४

[३] सूरा अल-हदीद: २८

[४] सूरह आले-इम्रान: ८५

[५] सूरह आले-इम्रान: १९

[६] सूरह अल्-अन्आम: १५३

[७] बुखारी एवं मुस्लिम

[८] सहीह मुस्लिम

[१] सहीह बुखारी

[१०] सूरह आले-इम्रान: २०

[११] सहीह मुस्लिम

[१२] इस हदीस को इमाम अहमद ने रिवायत किया है।

[१३] इस हदीस का शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया ने “किताबुल ईमान” के अन्दर उल्लेख करने के बाद फ़रमाया है कि इसे इमाम अहमद और मुहम्मद बिन नस्र मर्वज़ी ने रिवायत किया है।

[१४] सूरह आले-इम्रान: ८५

[१५] सूरह अन्-नहल: ८९

[१६] सूरह अल्-हज्ज: ७८

[१७] इस हदीस को इमाम अहमद और तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और तिर्मिज़ी ने हसन कहा है।

[१८] सूरह अल्-बकरा: २०८

[१९] सूरह अन्-निसा: ६०

[२०] सूरह अल्-अन्आम: १५९

[२१] सूरह आले-इम्रान: १०६

[२२] सूरह अन्-निसा: ४८

[२३] सूरह अल्-अन्आम: १४४

[२४] सूरह अन्-नहल: २५

[२५] सहीह बुखारी एवं सहीह मुस्लिम

[२६] सूरह आले-इम्रान: ६५-६७

[२७] सूरह अल्-बक्ररा: १३०

[२८] सूरह अर्-रूम: ३०

[२९] सूरह अल्-बक्ररा: १३२

[३०] सूरह अन्-नह्ल: १२३

[३१] सूरह आले इम्रान: ६८

[३२] सूरह अल्-माइदा: ११७

[३३] सूरह अर्-रूम: ३०

[३४] सूरह अल्-बक्ररा: १३१

[३५] सूरह अल्-बक्ररा: १३२

[३६] सूरह बक्ररह: १३०

[३७] सूरह अल-अन्आम: १५३

[३८] सूरह हूद: ११६

[३९] अल्-माइदा: १०५